फरीदाबाद
# मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

*आज अन्तरिक्ष तक युद्ध-क्षेत्र और युद्ध के लिये क्षेत्र बन गया है। एटम बमों और प्रक्षेपास्त्रों के भण्डार तो हैं ही। ऐसे में हमारे लिये सर्वोपरि महत्व की बात तो यह है कि सरकारों के गिरोहों के बीच तीसरा विश्व युद्ध नहीं हो। इसके लिये जरूरी है कि मजदूरों-मेहनतकशों के असन्तोष, विरोध, विद्रोह हर जगह बढ़ें।*

नई सीरीज नम्बर 246 1/- दिसम्बर 2008

# आईये अपने आप से कुछ बातें करें

अपने आप से बात करने के लिये समय चाहिये। और यहाँ मरने की फुर्सत नहीं है!

पर बात इतनी ही नहीं लगती। वास्तव में खुद से बात करने में डर लगता है। स्वयं से बात करने से बचने के लिये भागमभाग में लगे रहते हैं। कोशिश करते हैं कि खाली न हों। काम ढूँढते हैं, चिन्तायें ढूँढते हैं, गुस्सा-भड़ास की वजहें ढूँढते हैं-निकालने के जरिये ढूँढते हैं।

कारण ? हर समय प्रत्येक का अत्यन्त नाजुक सन्तुलन में होना, सन्तुलन बिगड़ने की स्थिति में होना।

ऐसा काफी समय से है। बल्कि, अनिश्चितता -अस्थिरता-असुरक्षा बढती आई है।

● सड़क ही लें। सड़कें बढती आई हैं। वाहनों की सँख्या और रफ्तार बढते आये हैं। भारत सरकार के क्षेत्र में ही अब प्रतिदिन 400 लोगों की सड़कों पर हादसों में अकाल मृत्यु हो रही है। और, गति-वाहन-सड़क-तनाव की चपेट में यहाँ हर रोज 5000 लोग बुरी तरह घायल हो रहे हैं। एक सड़क ही सब कुछ बिगाड़ने के लिये पर्याप्त है। सड़क कैसे छोड़ें?

● फरीदाबाद में फैक्ट्रियाँ लें। इन में हर रोज पावर प्रेसों पर 200 मजदूरों की उँगलियों के पोर, पूरी उँगलियाँ, अँगूठे, पहुँचे से हाथ कटते हैं। फैक्ट्री कैसे छोड़ें? नौकरी कैसे छोड़ें ?

बहुत-ही बच कर चलते हैं। तन की तब ऐसी दुर्गत है। मन का तो और भी बुरा हाल है।

डर और लालच के छोटे-से अखाड़े में हम बींध दिये गये हैं। डर और लालच के संकीर्ण दायरे में हम स्वयं को हाँकने लगे हैं। हालात का बद से बदतर होना इसका परिणाम है।

## कुछ करने से क्या होगा ?

इस सन्दर्भ में आईये अपने कल, आज, और आने वाले कल को देखने का प्रयास करें। जो बीत गया उससे सबक लेना आसान होता है। पहले स्वयं को धोखा देने के लिये प्रयोग की गई दलीलें लें – यह आज भी व्यापक स्तर पर इस्तेमाल हो रही हैं।

अपने तन और मन के खिलाफ जाने के लिये "पापी पेट" की दलील दी गई। कहा कि बच्चों के लिये जलालत झेल रहे हैं। और, अचूक बाण : यह सब " जिम्मेदारियाँ निभाने के लिये" कर रहे हैं।

नकारते रहे हैं हम तथ्यों को। मुँह चुराते रहे हैं वास्तविकता से। "मेरे"- "हमारे" साथ ऐसा नहीं होगा का स्वपन बार-बार धराशायी होने पर भी स्वपन बना रहा है।

हम जो करते रहे हैं उसका असर पड़ा है – पर वह नहीं जो हम चाहते थे। पेट-बच्चों-जिम्मेदारियों की स्थिति और विकट हो गई है। हम जो करते रहे हैं उससे दोहन-शोषण पृथ्वी के गर्भ से अन्तरिक्ष तक फैल गया है। और तीव्र गति ने हमारी दुर्गत कर दी है।

इसलिये प्रश्न : "क्या फर्क पड़ता है ?" नहीं है। बल्कि हमारे लिये सवाल यह हैं : "हम जो कर रहे हैं उससे कितना और कैसा फर्क पड़ेगा ? हम जो कर रहे हैं वह नहीं करें तो क्या और कैसा फर्क पड़ेगा ? हम जो परिवर्तन चाहते हैं उनके लिये क्या-क्या कर सकते हैं ? "

## छुट्टी-छुट्टी-छुट्टी

तन के लिये अच्छी, मन के लिये अच्छी, जीवन के लिये अच्छी है छुट्टी! और आज छुट्टी अपने संग भय-आशंका लिये है।

कितना हिसाब लगाते हैं हम एक दिन की छुट्टी के लिये। दिहाड़ी टूटने की बात। एक दिन की छुट्टी पर दूसरे दिन वापस भेज दिये जाने का भय। नौकरी से निकाल दिये जाने का डर। बहुत-ही मजबूरी में छुट्टी करते हैं। सोचते हैं कि छुट्टी करने में नुकसान ही नुकसान है, मजदूर को नुकसान है।

लेकिन तथ्य और ही कुछ बयान करते हैं। यह कम्पनियाँ हैं जो चाहती हैं कि मजदूर छुट्टी नहीं करें। पूर्ण उपस्थिति के लिये कम्पनियाँ पुरस्कार राशि देती हैं। और, अनुपस्थिति के लिये सजा के प्रावधान। हाँ, कम्पनियों को जब जरूरत नहीं होती तब जबरन छुट्टी करती हैं। जबरन छुट्टी सजा है, यह छुट्टी नहीं होती।

आईये मजबूरी में छुट्टी और जबरन छुट्टी के संकीर्ण दायरे से बाहर निकलने की कोशिश करें। तन कहे तब छुट्टी करना। मन कहे तब छुट्टी करना। साथी कहे तब छुट्टी करना..... उलटी गँगा सीधी होने लगेगी।

विशाल कम्पनियों के दिवालिया होने, बड़े-बड़े बैंकों के बैठ जाने, दूसरों के भविष्य की गारन्टी देने वाली बीमा कम्पनियों के दिवालिया होने के इस दौर में अपने आप से बातें करना और भी जरूरी हो गया है। यह समय नये सिरे से प्रश्न करने का है। कम्पनी-बीमा-बैंक-सरकार पर भरोसे के स्थान पर नये भरोसों को स्थापित करने का वक्त है यह।

## दिल्ली से –

***सरीन इम्पैक्स मजदूर :*** "ए-2/35 सी-1 जनकपुरी स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1400 रुपये, लेयरमैन की 2000 रुपये और कारीगर पीस रेट पर। पचास लोग काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं। तनखा हर महीने देरी से, 15-20 तारीख को। छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं – सितम्बर में किये काम के पैसे आज 29 नवम्बर तक नहीं दिये हैं।"

***अन्शुन मल्टीटेक श्रमिक :*** " बी-123 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हम 200 मजदूर जिप बनाते हैं। हम सब को कम्पनी अकुशल श्रमिक, हैल्पर कहती है। ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। बेसिक वेतन 2700-3000 रुपये है और निवास किराया भत्ता के नाम पर इसका 40 प्रतिशत। फैक्ट्री में प्रतिदिन 3½ घण्टे ओवर टाइम काम होता है। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से और वह भी बेसिक अनुसार, 2700-3000 के हिसाब से महीने में 1000-1200 रुपये।"

***सेक्युरिटी गार्ड :*** " हौज खास में कार्यालय वाली **डी डी एस ग्रुप** हम गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 5300 रुपये देते हैं।"

*तकनीकी दिक्कत की वजह से इस अंक में हम "आज चीन में" नहीं दे पा रहे हैं।*

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

# कानून हैं शोषण के लिये, छूट है कानून से परे शोषण की

***कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से;*** *● श्रम आयुक्त हरियाणा द्वारा चण्डीगढ़ से 24.10.08 को भेजे पत्र अनुसार प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.07.2008 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3665 रुपये (8 घण्टे के 141 रुपये) ; अर्धकुशल अ 3795 रुपये (8 घण्टे के 146 रुपये) ; अर्धकुशल ब 3925 रुपये (8 घण्टे के 156 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4055 रुपये (8 घण्टे के 161 रुपये) ; कुशल श्रमिक ब 4185 रुपये (8 घण्टे के 164 रुपये) ; उच्च कुशल मजदूर 4315 रुपये (8 घण्टे के 168रुपये) ।*

***वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइजेज मजदूर:*** "31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 1000 से ऊपर वरकर हैं — अधिकतर को ठेकेदारों के जरिये रखा है। सैकेन्ड प्लान्ट की प्रेस शॉप में 250 से 600 टन की 18 बड़ी पावर प्रेसों और 50 से 100 टन की 10 छोटी पावर प्रेसों पर 200 मजदूर काम करते हैं — सब वरकर ग्लोबल ठेकेदार के जरिये रखे हैं। जहाँ छोटे पुर्जे बनते हैं उस जनरल प्रेस शॉप में मुश्किल से 8-10 स्थाई मजदूर हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। मेरे सामने पावर प्रेसों पर दो मजदूरों के पहुँचे से हाथ कटे और एक वरकर की दो उँगली कटी — कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी, प्रायवेट में इलाज करवाया। फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी*** के सब मॉडलों और ***होण्डा*** कार के पुर्जे बनते हैं। साहब लोग गाली देते हैं।"

***साँई टैक्स श्रमिक :*** "प्लॉट 4 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 12 घण्टे के 100 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। अक्टूबर की तनखा आज 15 नवम्बर तक नहीं दी है। नौकरी छोड़ने पर 10-20 दिन किये काम के पैसे नहीं देते। गाली देते हैं।"

***वीटा दूध कामगार :*** "ऊँचा गाँव, बल्लभगढ स्थित हरियाणा सरकार की डेयरी में ठेकेदार के जरिये रखे हम 50 मजदूरों को साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। हमारी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हम में हैल्परों को 30 दिन ड्युटी के 3000 रुपये देते हैं और अक्टूबर का वेतन आज 20 नवम्बर तक नहीं दिया है।"

***गुडईयर टायर वरकर :*** " मथुरा रोड़, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में रबड़ के कार्य में ठेकेदार के जरिये रखे हम 30 मजदूरों को अक्टूबर की तनखा भी 3510 रुपये दी। जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं देते।"

***रैक्समैक्स मजदूर :*** "प्लॉट 216 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये। सुबह 8½ से रात 8 की शिफ्ट है, रात 11 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में ***आयशर*** गाड़ी के पुर्जे बनते हैं।"

***हनु इन्डस्ट्रीज श्रमिक :*** "एम बी 152 बी बाबा हृदयराम कॉलोनी, मुजेसर स्थित वर्कशॉप में महिला मजदूरों की तनखा 1800-2000 रुपये, पुरुष हैल्परों की 2000-2100 और ऑपरेटरों की 2100-3000 रुपये। यहाँ 25 मजदूर काम करते हैं — ई.एस.आई. 5 की और पी.एफ. किसी का नहीं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, रात में 3-4 लोग ही रहते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रबड़ का काम है, गर्म काम है, गुड़ नहीं देते। दस्ताने माँगने पर उलटा-सीधा बोलते हैं। भट्ठी फटने का डर रहता है — स्टीम मीटर व सेफ्टी वाल्व ठीक नहीं कराते। साबुन, वर्दी-जूते, बोनस नहीं देते। बहुत गाली देते हैं। चोटें लगती रहती हैं — एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। महिला व पुरुष मजदूरों के लिये सिर्फ एक लैट्रीन — गन्दी रहती है। पीने के पानी का प्रबन्ध मजदूर स्वयं करें।"

***भारतीय मल्टीफासनर्स कामगार :*** "प्लॉट 26 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2300 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। डेढ सौ मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई. एस.आई. व पी.एफ. राशि 3586 रुपये तनखा अनुसार काटते हैं और बीच-बीच में दो महीने काटनी बन्द कर देते हैं।"

***ध्रुव ग्लोबल वरकर :*** "14 मील पत्थर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम को कम्पनी गुड वर्क के तौर पर दिखाती है। ओवर टाइम उर्फ गुड वर्क का भुगतान सिंगल रेट से है पर दिखाते दुगुनी दर से हैं। इसके लिये 4 घण्टे को 2 घण्टे लिखते हैं। हैल्परों को 8 की बजाय 10 घण्टे रोज ड्युटी पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। कैन्टीन में घटिया चाय 3 रुपये कप और घटिया भोजन 15 रुपये थाली।"

***ओरफिक डाइंग श्रमिक :*** "प्लॉट 120-121 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 400 स्थाई मजदूर और 7 ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से — अक्टूबर का वेतन आज 19 नवम्बर तक नहीं दिया है।"

***टेकमसेह प्रोडक्ट्स मजदूर :*** "38 किलोमीटर पत्थर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में रेफ्रिजिरेटरों के कम्प्रेसर बनते हैं। केल्विनेटर से व्हर्लपूल ने फैक्ट्री ली और 2500 मजदूरों की छँटनी करने के पश्चात 1997 में कम्प्रेसर डिविजन टेकमसेह कम्पनी को दी थी। तब वर्तमान स्थल के संग इन्डस्ट्रीयल एरिया में भी जगह थी और 1420 स्थाई मजदूर थे। सन् 2000 में तालाबन्दी और सरकार से कुछ विभाग बन्द करने की अनुमति ले कर कम्पनी ने 500 स्थाई मजदूरों की छँटनी की तथा पूरा कार्य वर्तमान स्थल पर स्थानान्तरित किया। कथित वी. आर. एस. के तहत जिन 50 मजदूरों ने इस्तीफे नहीं दिये उन्हें हैदराबाद फैक्ट्री भेजा। पुनः 2004 में कम्पनी ने 'स्वैच्छिक सेवा निवृति योजना' लागू की और 900 स्थाई मजदूरों में से 280 को नौकरी से निकाला। अब फिर वी.आर.एस. ! कम्पनी ने 1 नवम्बर को नोटिस लगाया कि 15 नवम्बर तक कम से कम 150 स्थाई मजदूर इस्तीफे देंगे तो योजना लागू होगी। इस वर्ष में कम्पनी ने लेमिनेशन विभाग बन्द किया, वायर वाइन्डिंग बन्द किया, टूल रूम बन्द किया... मैनेजमेन्ट मशीनें बाहर ले जाने लगी तो मजदूरों ने रोका। यूनियन ने 'किसी की नौकरी नहीं जायेगी' का श्रम विभाग में समझौता होने की कह कर मशीनें जाने देने को कहा। फिर मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच दीर्घकालीन समझौता हुआ। अति कुशल श्रमिकों को लाइन पर माल चढाने-उतारने में लगाया गया, बार-बार स्थान बदले गये। ऑफ सीजन आरम्भ होते ही सब कैजुअल वरकर निकाल दिये। और, दो महीने बाद वी.आर. एस...... पहले सप्ताह मैनेजमेन्ट ने दबाव नहीं डाला। इस्तीफों की सँख्या बहुत कम। फिर 10 नवम्बर से अधिकारियों के दल सूचियाँ ले कर विभागों में जाने लगे, नाम बताने लगे और बोले कि 50 वर्ष आयु से ऊपर वाला कोई मजदूर फैक्ट्री में नहीं रहेगा। साहबों को 13 नवम्बर तक प्रभाव नजर नहीं आया तो धमकाने लगे। 'इस्तीफे लिखो या चेन्नै, हैदराबाद, सिलवासा, सिलीगुड़ी जाओ अन्यथा निलम्बित हो'। साहब लोग 15 नवम्बर को रात 9 बजे तक फैक्ट्री में रहे : '15 नवम्बर तक तुम्हारा है, फिर कम्पनी की मर्जी — कुछ भी हो सकता है!' इस सब के बावजूद कम्पनी न्यूनतम निर्धारित सँख्या के निकट तक भी नहीं पहुँच पाई। तब साबह लोग सोमवार, 17 नवम्बर सुबह 10 बजे तक का समय दे कर गये.... फैक्ट्री टेकमसेह कम्पनी के नियन्त्रण में आने के बाद स्थाई मजदूर एक-तिहाई हो रहे हैं और उत्पादन चार गुणा हो गया है। हैदराबाद फैक्ट्री में तो वी. आर.एस. का और भी बुरा हाल है — 14 नवम्बर तक मात्र 9 मजदूरों ने फार्म भरे थे।"

***सुपर फैशन वरकर :*** "प्लॉट 262 ए-बी सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं पर वास्तव में करते सिंगल रेट से हैं। दो रजिस्टर बना रखे हैं। एक रजिस्टर जिसमें महीने के 100-125 घण्टे ओवर टाइम को दर्शाते हैं उसमें भुगतान सिंगल रेट से। दूसरे रजिस्टर में भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं और इसमें महीने में 14-18 घण्टे ओवर टाइम दिखाते हैं।"

***ए सी सी सीमेन्ट मजदूर :*** " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित भास्कर एस्टेट में ए सी सी कम्पनी का प्लान्ट थोक में सीमेन्ट प्रयोग के लिये तैयार करता है। यहाँ काम करते हम 90 मजदूरों के

***(बाकी पेज तीन पर)***

# गुड़गाँव में मजदूर

***ओरियन्ट क्लोथिंग मजदूर :*** "सैक्टर-37, खाण्डसा में प्लॉट 294, 296, 298, 299, 436, 437 में कम्पनी की फैक्ट्रियाँ हैं। प्लॉट 296 में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों को सुबह 9 से रात 10 बजे तक ड्युटी, यानी रोज 13 घण्टे काम पर महीने के 3510 रुपये देते हैं। मैनेजर लोग कमीशन लेते हैं। सिलाई कारीगरों को भी ठेकेदार सही पेमेन्ट नहीं करता और साहबों को शिकायत करते हैं तो साहब उलटा मजदूरों को डाँट देते हैं। तनखा हर महीने देरी से — कभी 15 तो कभी 20 तारीख को। जनवरी व जुलाई से देय महँगाई भत्ते को साल-छह महीने बाद लागू करते हैं। डी. ए. का बकाया नहीं देते और नकली हस्ताक्षर कर फाइल तैयार करते हैं। नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये दो-तीन महीने दौड़ाते हैं। कोई जाँच आती है तब उस दिन बिना कार्ड वाले मजदूरों की छुट्टी कर देते हैं। गाली बहुत देते हैं।"

***आनन्द निशिकावा श्रमिक :*** "प्लॉट 119 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 300 से अधिक मजदूर काम करते हैं — सब एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी की बजाय सिंगल रेट से। रबड़ लाइन है, ***मारुति सुजुकी*** का काम होता है। महीने में एक-दो की उँगली-अँगूठा कट जाते हैं। कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती और प्रायवेट में सेठी अस्पताल में उपचार कराती है। हाथ कटे मजदूर को कोई क्षतिपूर्ति नहीं। गुड़ सिर्फ मिक्सिंग विभाग मजदूरों को। तनखा हर महीने देरी से — अक्टूबर का वेतन 24 नवम्बर को दिया।"

***एस एण्ड आर एक्सपोर्ट कामगार :*** "प्लॉट 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में बोर्ड पर सुबह 9 से साँय 6 ड्युटी लिखा है पर छोड़ते रात 8 बजे हैं। एक घण्टा भोजन अवकाश है। आठ की बजाय 11 घण्टे पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। पहले दिन से की बजाय काम करते 3 महीने हो जाते हैं तब ई.एस.आई. व पी.एफ. के प्रावधान लागू करते हैं। नौकरी छोड़ने पर मजदूर को फण्ड की राशि नहीं मिलती। फैक्ट्री में शीशे का सामान पैक करते और लोहे के स्टैण्ड बनाते 500 मजदूरों के लिये पीने के पानी का मात्र एक नल है। छुट्टी के बाद आधा घण्टा जबरन काम करवाते हैं। गाली देते हैं।"

***विवो ग्लोबल वरकर :*** "प्लॉट 413 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में दिवाली पर बोनस नहीं दिया। पूछा तो बोले कि कम्पनी घाटे में चल रही है। जबकि, कम्पनी घाटे में हो तब भी एक महीने की तनखा के बराबर बोनस देने का कानून है। दिवाली पर मिठाई का डिब्बा भी नहीं दिया — साहब बोले कि कम्पनी चेयरमैन की माँ मर गई है। फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9½ से रात 9-10 बजे तक है। इस दौरान चाय के लिये कोई समय नहीं देते। भोजन के लिये पैसे नहीं देते। एक-डेढ लाख रुपये तनखा ले रहे साहब अपने कानून बनाते हैं, सुबह 9½ की जगह 8½ आने को कहते हैं। सिलाई कारीगरों की तनखा में से ठेकेदार का कमीशन काटते हैं। काम ज्यादा होने पर साहब लोग कमीशन पर फैब्रिकेटर से बनवाते हैं और काम कम होते ही बिना फण्ड दिये निकाल देते हैं। कोई जाँच आने पर बिना कार्ड वालों को पैसे मिलेंगे कह कर फैक्ट्री से निकाल देते हैं और तनखा में से उस दिन के पैसे काट लेते हैं।"

***एवरग्रीन इन्टरनेशनल मजदूर :*** "प्लॉट 756 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम 30 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2500 और कारीगरों की 3000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। अक्टूबर की तनखा 20 नवम्बर को जा कर दी।"

***रांगी इन्टरनेशनल श्रमिक :*** "प्लॉट 98 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागा काटने वाले मजदूरों की तनखा 2400 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जो तनखा है वह भी नहीं देते, बहुत माँगने पर 100-200 रुपये खर्चा के पकड़ा देते हैं। सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें 27 नवम्बर तक नहीं दी तो हम धागा काटने वाले 35 महिला व पुरुष मजदूरों ने 28 नवम्बर को छुट्टी कर ली। आज, 29 नवम्बर को फैक्ट्री गेट पर 'धागा काटने वाले चाहियें' का बोर्ड लगाया है।"

***ग्राफ्टी एक्सपोर्ट कामगार :*** "प्लॉट 377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी गेट पास नहीं देती — रात 2 बजे छूटने पर रास्ते में पुलिस बहुत परेशान करती है। सुबह 9½ से रात 8 बजे तक को कम्पनी ड्युटी कहती है और उसके बाद के समय को ओवर टाइम। रोज 10½ घण्टे पर हैल्परों को महीने के 3586 रुपये। साढे दस घण्टे की ड्युटी के बाद भी महीने में 150-175 घण्टे काम होता है। इन 150-175 घण्टों के लिये कम्पनी 16 रुपये प्रति घण्टा देती है, जिसे कम्पनी ओवर टाइम कहती है उसका भुगतान भी सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. उत्पादन व फिनिशिंग में 350 सिलाई कारीगरों और धागा काटने वालों में किसी के नहीं हैं।"

***कोन्डोर वरकर :*** "प्लॉट 792 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 2500 रुपये, स्पोटर की 2800 और सिलाई कारीगर की 3500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 मजदूरों में 10-12 की ही। ओवर टाइम बहुत ज्यादा, महीने में 250-300 घण्टे और इसका भुगतान सिंगल रेट से। मैनेजर गाली देता है।"

***ऋचा ग्लोबल मजदूर :*** "प्लॉट 232 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कीर्तिनगर, दिल्ली वाली कम्पनी की फैक्ट्री से ट्रान्सफर किये मजदूरों को इस्तीफों के लिये परेशान किया जा रहा है। इस वर्ष मार्च में दिल्ली से गुड़गाँव भेजने पर कम्पनी ने आने-जाने के लिये वाहन का प्रबन्ध नहीं किया और न ही वेतन में कोई वृद्धि की। ऐसे में कुछ मजदूरों ने दिल्ली में श्रम विभाग में शिकायत की और गुड़गाँव जाने से इनकार कर दिया। वहाँ श्रम विभाग में मामला अभी चल रहा है। स्थाई मजदूरों में से 13 गुड़गाँव फैक्ट्री आये। इन 8 महीनों में परेशान कर मैनेजमेन्ट ने 10 मजदूरों से इस्तीफे लिखवा कर उन्हें निकाल दिया है परन्तु दो महिला और एक पुरुष मजदूर नौकरी छोड़ने से इनकार पर अड़े हैं। बिना कोई पत्र दिये गेट रोकने जैसी हरकतों को झेल चुके इन मजदूरों को इधर मैनेजमेन्ट अन्य वरकरों से अलग बैठाने लगी है, अधिक उत्पादन माँग रही है, प्रोडक्शन मैनेजर गाली देता है।"

***रोलैक्स ऑटो श्रमिक :*** "प्लॉट 303 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में अगस्त माह से ई.एस.आई. व पी.एफ. के प्रावधान लागू किये हैं तथा हैल्परों की तनखा 2400 की जगह 3586 रुपये की है। लेकिन, शायद दस्तावेजों के फेर में हमें अगस्त माह की तनखा अभी तक नहीं दी है, मात्र 2000 रुपये एडवान्स दिये हैं।"

***पर्ल ग्लोबल कामगार :*** "कम्पनी की उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 138 तथा 222 और फेज-5 में प्लॉट 870 स्थित फैक्ट्रियों में उत्पादन बन्द है। नरसिंहपुर, खाण्डसा और उद्योग विहार फेज-5 में प्लॉट 446 तथा 592 स्थित फैक्ट्रियों में उत्पादन जारी है। पर्ल ग्लोबल की सब फैक्ट्रियों में गार्ड कम्पनी ने स्वयं रखे हैं। गार्ड 12-12 घण्टे की शिफ्टों में ड्युटी करते हैं पर कम्पनी दस्तावेजों में 8 घण्टे ड्युटी ही दिखाती है और गार्डों को ओवर टाइम के पैसे नहीं देती। उत्पादन कार्य करते मजदूरों को प्रतिदिन 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और उसके बाद के समय का सिंगल रेट से।"

***ईस्टर्न मेडिकिट वरकर :*** "उद्योग विहार में 6 प्लॉटों में स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में हम कैजुअल वरकरों को अक्टूबर की तनखा 25 नवम्बर को जा कर दी और अक्टूबर में किये ओवर टाइम के पैसे आज 29 नवम्बर तक नहीं दिये हैं। हम 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। रात को कैन्टीनों में कैजुअल वरकरों को खराब भोजन देते हैं।"

---

**कानून हैं शोषण..** *(पेज दो का शेष)*

छूटने का कोई समय नहीं है। चालू होने के बाद दिन-रात काम चलता है, हमें लगातार 48-60 घण्टे भी काम करना पड़ता है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। कोई ओवर टाइम नहीं। महीने के 4100-4500 रुपये। इधर 5-6 साल से लगातार काम कर रहे मजदूरों को जबरन निकाल रहे हैं। निकालने के बाद प्रोविडेन्ट फण्ड की राशि निकालने का फार्म नहीं भर रहे।"

***वी एक्स एल टैक्नोलॉजी कामगार :*** "20/2 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों को बोनस दे दिया है पर हम कैजुअल वरकरों को नहीं दिया है, दो वर्ष से नहीं दिया है।"

# उपचार और बाजार

यहाँ बीमारियों की बात नहीं करेंगे। बीमारियों के कारणों की चर्चा भी नहीं करेंगे। निगाह अंग्रेजी, यानी ऐलोपैथिक उपचार पर रखेंगे।

बात 1984-85 की है। तब मैं मेडिकल कॉलेज का छात्र था। मेरी इच्छा एक अच्छा चिकित्सक बनने की थी। इसके लिये आवश्यक ज्ञान व हुनर प्राप्त करना चाहता था। इसके साथ थोड़ा-सा धन कमाने की इच्छा भी जुड़ी थी। जरूरतमन्दों का उपचार करूँ और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये धन भी हो। मेरे अधिकतर सहपाठियों में भी यही भावनायें थी।

लेकिन, 1992-93 से बाजार का उपचार पर हावी होते जाना मुझे दिखने लगा। यहाँ दिखने लगा।

साधनहीनों को अति आवश्यक होने पर भी उपचार उपलब्ध नहीं होना। सम्पन्नों को आवश्यक नहीं होने पर भी पैसों की चाह में उपचार परोसना। एक तरफ मर रहों को अस्पताल में बिस्तर नहीं और दूसरी तरफ सामान्य-सी बीमारी, जैसे वायरल बुखार होने पर भर्ती कर लेना तथा 50-60 हजार रुपये का बिल बना देना।

— सरकारी अस्पताल 1980 से लगातार उपेक्षा के शिकार हैं। तब सरकारों के व्यय में स्वास्थ्य क्षेत्र का हिस्सा तीन प्रतिशत था जो घटते-घटते 2001 तक एक प्रतिशत से भी कम, 0.9% तक आ गया। अतः देख-रेख भी नहीं, वृद्धि की तो बात ही क्या करना।

— विश्व-भर से रोगियों को उपचार के लिये, सस्ते उपचार के लिये आमन्त्रित करना। अति विशेषज्ञता वाले महँगे अस्पतालों के निर्माण के लिये सस्ते में जमीन उपलब्ध कराना।

— 1980 में 160 सरकारी मेडिकल कॉलेज थे और आज 2008 में यह सँख्या 170 तक नहीं पहुँची है। इसी अवधि में निगमित क्षेत्र में 100 से अधिक नये मेडिकल कॉलेज खुले हैं। चिकित्सक बनने के लिये कई लाख रुपये खर्च करना आवश्यकता बन गया है।

— मेडिकल कॉलेज खोलने के लिये 500 बिस्तर का अस्पताल आवश्यक है। आज 70 करोड़ रुपये वार्षिक व्यय में 500 बिस्तर का अस्पताल तथा मेडिकल कॉलेज सहज ढँग से चल सकते हैं। भारत में 600 जिले हैं, प्रत्येक जिले में सरकारी मेडिकल कॉलेज.... बाजार के प्रभाव में बाधा। सरकारें अति विशेषज्ञता के लिये एक संस्थान पर 200-250 करोड़ रुपये वार्षिक खर्च करती हैं।

— नर्स, फार्मासिस्ट, लैब टैक्नीशियन, फिजियोथेरेपिस्ट, ऑपरेशन थियेटर टैक्नीशियन की बीमार समाज में आवश्यकता लाखों में है। एक डॉक्टर के संग 3 नर्स। सरकारी क्षेत्र में इनके शिक्षण-प्रशिक्षण के लिये 1980 से उल्लेखनीय वृद्धि नहीं। जबकि, गली-गली में इनके संस्थान खुल गये हैं। इस समय फरीदाबाद में ही 16 हैं — सरकारी एक भी नहीं।

— सरकारी अस्पतालों में नर्सों व अन्य पैरा मेडिकल स्टाफ की भारी कमी है। मानक अनुसार 200 बिस्तर के अस्पताल में 200 नर्स होनी चाहियें। सरकारें 50-60 पद ही स्वीकृत करती हैं। और, वास्तव में 20-30 नर्स ही होती हैं। हाँ, भारत सरकार-हरियाणा सरकार नर्सों के निर्यात को प्रोत्साहित करती हैं।

— स्वास्थ्य बीमा नया, तेजी से बढता धन्धा है। बीमा बीमारियों का नहीं किया जाता बल्कि राशि आधारित है। यह अस्पतालों को अनावश्यक उपचार के लिये प्रेरित करता है। यह बीमा कम्पनी को आवश्यक उपचार पर भी कैंची चलाने को प्रेरित करता है। अस्पतालों और बीमा कम्पनियों की खींचातान ने बिचौलिये (टी पी ए) को जन्म दिया है जो बीमा करवाने वाले के लिये अतिरिक्त व्यय व परेशानी लिये है।

— धर्मार्थ अस्पतालों में भी बाजार का दबदबा कायम हो गया है। दिल्ली में मूलचन्द, गंगाराम और यहाँ फरीदाबाद में सनफ्लैग, एस्कोर्ट्स अस्पताल उदाहरण हैं। अब इन में उपचार बहुत महँगा हो गया है। गंगाराम अस्पताल की ही बात करें। मरीज से पहला प्रश्न : स्वास्थ्य बीमा है कि नहीं ? है तो कितने का ? तीन लाख रुपये का है तो कहीं और देखिये। दस लाख रुपये के बीमे से कम वालों को उपचार कहीं और करवाने की सलाह दी जाती है।

उपचार का बाजार आज भारत में एक लाख पचास हजार करोड़ रुपये वार्षिक का है। लोग प्रत्यक्ष तौर पर एक लाख पन्द्रह हजार करोड़ रुपये और सरकारों के माध्यम से 35 हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष खर्च करते हैं।

उपचार पर बाजार के हावी होने का एक प्रतीक गुर्दे खरीदना और गुर्दे बेचना है।

— एक डॉक्टर

## अनुरोध

फरीदाबाद में 10-12 जगह और ओखला (दिल्ली) तथा उद्योग विहार (गुड़गाँव) में 'मजदूर समाचार' बाँटने में हमें हर महीने 15 दिन लगते हैं। बाँटने में सहायता की जरूरत है। अपनी सुविधा अनुसार आप एक अथवा अधिक स्थानों पर 'मजदूर समाचार' बँटवाने में सहयोग कर सकते हैं। स्थान तथा दिन के बारे में हम से सम्पर्क करें।

'मजदूर समाचार' के कोई संवाददाता नहीं हैं। समय हो तो अखबार लेते समय अपनी बातें बतायें। पहले से लिख कर रखी सामग्री दें या फिर पत्र डालें।

हमारा प्रयास ' मजदूर समाचार' की महीने में 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का है। इच्छा अनुसार रुपये-पैसे के योगदान का स्वागत है।

# मंदी में पेट काटने की बातें

मंदी की बातें चारों तरफ हो रही हैं। बाजार में माँग कम है, उत्पादन कम करना है, कीमतें गिर रही हैं, खर्चे कम करने हैं। इससे बाजार में माँग और कम होगी..... पर खैर, कटौतियों की माँग बढ रही है। और ढर्रा यह चला आ रहा है कि चर्चायें मजदूरों के वेतन व नौकरियों में कटौती पर केन्द्रित हैं।

कम्पनियों के खर्चों में कटौती करनी है तो देखने की जरूरत है कि खर्चे हो कहाँ रहे हैं। कम्पनियों के कुल खर्चों पर नजर दौड़ायें तो मशीनों और कच्चे माल के अलावा खर्चे ऐसे बँटते दिखते हैं —

1. टैक्स। सरकारें भाँति-भाँति के टैक्स, कर, ड्युटी, एक्साइज ड्युटी, कस्टम ड्युटी, बिक्री कर, बिजली-सड़क-पानी-सम्पत्ति कर आदि-आदि कम्पनियों से लेती हैं। यह सब मिल-मिलाकर कुल खर्च का बड़ा हिस्सा बनते हैं।

2. ब्याज, डिविडेन्ड, किराये खर्च का दूसरा बड़ा हिस्सा हैं।

3. कट-कमीशन-रिश्वत छोटे-बड़े ओहदों पर बैठे अधिकतर नेताओं, अफसरों, अधिकारियों, बाबुओं की दिनचर्या का अभिन्न अंग हैं। एक बड़ा खर्च यह भी हैं।

4. कम्पनियों के बड़े मैनेजर-डायरेक्टरों के वेतन-भत्ते भारी-भरकम होते हैं और यह लोग कम्पनी के काम के वक्त (या उस नाम से) मोटे खर्चे करते हैं।

हमारा अनुमान है कि 95 प्रतिशत या इससे भी ज्यादा खर्च कम्पनियाँ इन ऊपर दिये मदों पर करती हैं।

बचता है मजदूरों का वेतन। यह कम्पनियों के खर्च के 1-2-5 प्रतिशत के दायरे में ही आता है।

दो-तीन सौ साल मानव इतिहास में लम्बा समय नहीं है। इतना ही पीछे जा कर देखें तो दुनियाँ में फैक्ट्री उत्पादन शुरू नहीं हुआ था। अधिकतर उत्पादन किसान-दस्तकार करते थे। कुल उत्पादन के दसवें हिस्से, छठे हिस्से, चौथे हिस्से की वसूली ऊपर के तबकों द्वारा किये जाने की बातें सुनने को मिलती हैं। और किसानों-दस्तकारों का काम साल में दो-तीन महीने, कहीं ज्यादा तो 5-6 महीने। दिन में कुछ ही घण्टे का काम। रात में अँधेरा — छुट्टी। बड़े परिवार, लम्बे त्यौहार।

फैक्ट्री उत्पादन शुरू हुआ, और तेजी से मेहनतकशों की शामत आ गई, ताकत क्षीण होती गई। काम बढता गया — साल भर काम, दिन भर काम, रात में काम, त्यौहार छोटे होते गये, परिवार छोटे होते गये। मजदूरों के हाथ में आने वाला उत्पादन का हिस्सा कम होता गया। अब की स्थिति में आ पहुँचे हैं जहाँ बड़ी सँख्या में मजदूर 12 घण्टे की शिफ्ट, ऊपर से ओवर टाइम, रात्रि में तेज गति से काम करते हैं। परिवार घटा रहे हैं, त्यौहार घण्टों के हिसाब से मना रहे हैं।

दूसरी ओर सेनाओं का, अंतरिक्ष यानों और यात्राओं का, फाइव स्टार खर्चों का तांता लगा हुआ है।

सवाल है : कटौती की जरूरत है तो किन खर्चों में ?

— अमित

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसेट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011